Str. 326, 56. Calc. Ausg. इत्यादे: st. त्त्यादे: und चेनाद्यकाच्यपेा: (so auch A. C. D.).

Str 327, 60. Calc. Ausg. und die Handschriften: वेषास्

Str. 328, 61. Calc. Ausg. शलूषा, Schol. शिलूषस्पर्धेरपत्यं शैलूषः।—
Calc. Ausg. सर्ववेशी, Schol. सर्वे केशा द्रपालशापस्य सन्ति सर्वकेशी।—
62. Calc. Ausg. und D. यात्रीपुत्रो, Schol. धर्मी द्विया नाट्यधर्मी लोकधर्मी च। तस्याः पुत्रो धर्मीपुत्रः।

Str. 329, 65. Eine Randglosse : एते चलारे। दत्यासास्तालव्यासाम् । — Calc. Ausg. und die Handschriften : वेष ।

Str. 330, 67. Schol. स्थापको पि । — 68. Calc. Ausg. नान्हो तु पाठको नट्याः । Schol. नन्दत्त्ववश्यं नन्दो । नन्दनं नन्दः समृद्धिः । तन्त्रनात्प्रयोजनवाह्नान्दो पूर्वरङ्गाङ्गम् तस्याः पाठकः । Nach einer Rand-glosse ist नान्दिन् ebenfalls richtig. — 69 Calc. Ausg. und D. पा-रिपार्थिकः, die Scholien wie wir.

Str. 331, 72. Calc. Ausg पद्भ ohne Visarga.

Str. 332, 76. कुमार ist wohl auch als Synonym von भतृदार्क zu fassen.

Str. 333, 78. Schol. मारिया प्रि। — 80. Calc. Ausg. राष्ट्रीया। Eine Randglosse: नाट्याक्तरन्यत्रीत सीरस्वामा।

Str. 334, 85. D. E. व्ला: 1

Str. 335, 87. B. u. Schol. মানকা, eine Randglosse kennt beide Formen.

Str. 336, 91. Eine Randbemerkung: त्रप: प्रत्ययस्याभावे स भवान् तो भवतो । ते भवत इत्यादि । तस्प्रत्यये ततो भवान् ततो भवतो । ततो भवतः । — 92. Calc. Ausg. B. und E. देव ohne Visarga.

Str. 337, 94. Calc. Ausg. und die Handschriften: विद

Str. 338, 95. Die Scholien: डिम्ब्यत इति डिम्बः। स्तनं यो स्त-नपो पप। — 96. Calc. Ausg. पृथुको प्रभा । — Die Scholien: चीर् या चीर्पा पप।

Str. 339, 98. Calc. Ausg. व्यस्यम्, B. D. व्यस्यम्, die Scholien: व्यसि योवने तिष्ठति व्यस्यः । — 99. Die Scholien: योवनिको र्राप ।